भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 8 | शनिवार, 26-8-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

गुरुहरि प. पू. पप्पाजी की जयंती..........1 सितंबर

पहली सितम्बर.....गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की जयंती का महामंगलकारी दिन.....गुणातीत समाज के मुक्तों के मंगल का दिन ! गुरु की महिमा समझ कर गुणगान गाकर स्वयं को धन्य करने का दिन........ ओहो ! ऐसे अक्षरधाम के स्वरूप-जिनके दर्शनों के लिए देवी-देवता भी तरसते हैं, वे केवल करुणा करके हमारे लिए-हमारे जैसे बनकर अपने दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य मौका देने, हमें जीतेजी प्रभु की दिव्य मूर्ति का सुख देने जीवों का अकारण कल्याण करने, संसार के त्रिविध तापों से मुक्ति दिलाकर भीतर की सच्ची शांति देने धरती पर आये ! इन गुणातीत विभूतियों के चरणों में पराभक्ति के फूलों से स्वागत करते हुए अंतर के भाव से शत-शत वंदन.....

वैसे गुरु-शिष्य के संबंध के बारे ऐसा प्रचलित है कि शिष्य को अपने गुरु के मुताबिक चलना चाहिये, पर गुणातीत स्वरूपों की रीति-नीति देखें तो स्पष्ट होगा कि वे हमें खुश रखने हमारी रीति से वर्तते हैं....हमारी व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रगति के लिए वे भजन करते हैं....भक्त ही उनका प्राण-भक्त ही उनका श्वास हैं....उनका हर एक हलन-चलन केवल अपने भक्तों के लिए........

हमें मौज में ही मिली ऐसी गुणातीत विभूतियाँ—प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प. पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई जैसी विभूतियों की जयंती मनाने का हमें अवसर मिलता है, वह तो असल में हमारे जीवन की धन्यता कही जाये ! हम सब तो अपने भाग्य पर जितना नाज़ करें इतना कम ही है।

गुरुहरि योगीजी महाराज में प्रभु के स्वरूप की अनुभूति होने के बाद प.पू. पप्पाजी अपने जीवन की पल-पल केवल गुरुहरि योगीजी महाराज का आज्ञा, उनकी मर्जी, उनकी स्मृति और उनके संबंध वालों की महिमायुक्त सेवा में ही बिता रहे हैं....हर एक प्रसंग पर 'योगी और उनके संबंध वाले बहुत बड़े.....धाम, धामी और मुक्त ही परम सत्य !'—इसी गूंज का बिगुल बजा कर आज 84-85 वर्ष की आयु में वे देश-विदेश में धाम, धामी और मुक्त की प्रगट की निष्ठा जोर-शोर से फैला रहे हैं.........

ऐसे गुणातीत पुरुषों की जीवनशैली की ओर भी यदि हम सतत् नज़र रखेंगे तो हमारा रास्ता खूब सरल हो जाएगा.....हमारी चेतना जागृत हो जायेगी। जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होकर हमारी पूर्णाहुति होगी.....अखंड भगवान रखे प.पू. पप्पाजी जैसे गुणातीत संत कृपा करके स्वयं जीवन जीकर हम में धर्म, ज्ञान, वैराग्य-भक्ति का उदय करते हैं.....ऐसे गुणातीत स्वरूपों का ऋण हम कैसे चुका भी पायेंगे ?

तो, प.पू. पप्पाजी की जयंती के महामंगलकारी अवसर पर हम सावधान अवश्य बनें। समय-समय पर उनके द्वारा दिए साधना के रहस्य, स्वयं जीकर बताए गए अनुभव-भक्ति अदा करने के सुगम उपाय गुणातीत ज्योत की बहनों ने खूब नज़दीक से निहार कर **'प्रसन्न प्रबोध'** में छोटे-छोटे प्रसंगों के रुप में प्रकाशित करके गुणातीत समाज को प.पू. पप्पाजी जैसी विभूति का खूब ही मार्मिक अद्भुत दर्शन कराया है। चार-पांच प्रसंग इस अवसर पर आप के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। बहनों की जाग्रकता, स्वरुप का ओर दृष्टि, भक्ति व परिश्रम के लिए अंतर से धन्यवाद.........

महामानव

प. पू. पप्पाजी : '1952 में जून की पहली तारीख को मुझ में सभानता आई कि मैं योगी नियंत्रित हूँ। योगी मेरी आत्मा का प्रकाशक है। यह आत्मदर्शन हुआ। ब्रह्म का दर्शन हुआ। ब्रह्मस्वरूप की पहचान हुई। निष्ठा हुई और देह व आत्मा अलग हो गए। उस दिन से मैं डंके के चोट पर कहता था कि मैं महामानव हूँ और गरुर से घूमता कि मैं उनकी आज्ञा और अनुवृत्ति के मुताबिक पल-पल जीता हूँ– ज्यादा नहीं और कम भी नहीं। आज्ञा से अधिक जीऊं या कम जीऊं उसका वे मुझे ख्याल दे देते हैं। वो-योगी महाराज साकार ब्रह्म का स्वरूप हैं। उनकी अनुभूति हुई फिर मैं महामानव यानि– ब्रह्मनियंत्रित हूँ उस समानता से जीना शुरु हो गया।'

अखंड जागरूक

प.पू. पप्पाजी ने एक साधक के गले में गांठ लगाई हुई कंठी देखी। सो, उसे अपने पास बुलाया; फिर सभी को वह कंठी दिखा कर बोले–'देखो, इसने कंठी में जो गांठ लगाई हुई है, ऐसी मैं लगाता था।

ताड़देव में रोज सुबह गांठ लगा कर प्रार्थना करता था कि–

'हे महाराज ! आप और आपके (संबंध वाले) सभी दिव्य माने जाएं।'

ऐसी प्रार्थना करके गांठ लगाता और सारे दिन वह गांठ को रख रखता। शाम को खोल देता। गांठ लगी रहने से जाग्रतता रहती। इसकी गांठ देख कर मुझे मेरी वह स्मृति हो गई।'

सुरुचि

प.पू पप्पाजी ने खूब प्रसन्न होकर एक मुक्त को थपकी मारी। सो, एक साधक बोला–'पप्पाजी राजी हो गए लगते हैं।'

प.पू. पप्पाजी बोले, 'हां, स्वभाव छोड़ने का जो आग्रह रखता है उस पर मेरी प्रसन्नता है, है और है ही। मैं कभी प्रसन्नता मांगने नहीं गया, लेकिन मैं जानता था कि योगी के सिद्धान्त से पल-पल वर्तेंगे तो प्रसन्नता मांगने जाना नहीं पड़ेगा, वे प्रसन्न ही होंगे।'

हां-हां गडथल (कोशिश)

प.पू. पप्पाजी आज सुबह (गुणातीत ज्योत में) जल्दी पधारे। पू. पप्पाजी पधारे, सो सभी मुक्त काम छोड़ कर दर्शन के लिए आए। पू.ज्योति बहन को देख कर पू. पप्पाजी ने पूछा, 'ज्योति फोई ! कहां से पधारे ?'

एक मुक्त ने प्रत्युत्तर दिया–'जपयज्ञ के हॉल में से'

दीन भाव से मानो गिड़गिड़ा कर अरज करते हुए पू. ज्योति बहन बोले–'हां हां गडथल (कोशिश) करते रहते हैं। जैसी आती है वैसी धून करते हैं। आपकी रीति की होती होगी या नहीं ? लेकिन आप स्वीकार लेते हो ना ?' पू. पप्पाजी बोले–'हां, बापा मान ही लेते हैं ! क्योंकि साधन से वे कहां प्रसन्न होते हैं ! वचन की कीमत है ना ! वचन का पालन करते हो ना ? सो, मान लेते हैं-भगवान भावना ही देखते हैं।'

बढ़िये से बढ़िया

प.पू. पप्पाजी के सान्निध्य में शाम को सभी बैठे थे। वहां एक साधक ने आकाश की ओर निगाह करके बादल देख कर पूछा : 'पप्पाजी ! बरसात आए वह बढ़िया या ना आए वह ?'

सरलता से पू. पप्पाजी ने उत्तर दिया–

'मूर्ति भूलें नहीं वह बढ़िया।'

हे पप्पाजी ! हमारा घर और देह मंदिर बनाने का जो आपके अंतर का संकल्प है; उस संकल्प को हम जल्दी से जल्दी साकार करके आपको हाश कर दें......अपने देह और घर को ऐसा साफ-सुथरा बनाएं जिससे हमारे भीतर आपको रहने में आनंद आए और साथ ही हम आपकी मर्जी के मुताबिक का ऐसा जीवन जीयें ताकि आपको अनंत वर्षों तक धरती पर रहने का मन हो.......

✡✡✡✡✡

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

✡ प.पू. काकाजी के बोलने का तरीका हमेशा ऐसा रहा था कि बातों-बातों में, मजाक-मजाक में, लाईट टोन में वे खूब गहराई की-रहस्य की बात कर देते.....पर, वो बात-रहस्य हमें पकड़ना पड़ता था।

✡ इनके साथ जुड़े मुक्तों-सेवकों को कोई थोड़ी भी हल्की नज़र से देखे, वह प. पू. काकाजी को ज़रा भी बर्दाश्त नहीं था और इसी लिये, यदि हमने सोचा-समझा होगा तो– हमारी क्षतियों, त्रुटियों, गल्तियों, कसरों का जिम्मा वे अपने सिर ले लेते थे ! परन्तु आज हमारा ऐरा-गैरा (थर्ड क्लास) बीहेव देख कर-हमें लो लेवल से वर्तते देख कर उन्हें कितना दर्द होता होगा ? पर मेरी यह बात उसे ही असर करेगी जो सच में उनसे जुड़ा होगा। बाकी तो आये और सभा में सयाने बन कर बैठे....तुम बक-बक हम सुन-सुन !

✡ एक भजन की पंक्ति है–**'अंतर्दृष्टिनुं (का) छे (है) जीवन...'** हम दादर मंदिर में रहते थे। तब संतों ने एक बार बाहर घूमने जाने के लिए पू. महंतस्वामिजी को पूछा......पू. महंतस्वामी ने तीन-चार दिन तक कोई जवाब नहीं दिया।

फिर हमने जब पू. महंतस्वामी को दोबारा पूछा कि आप इतने दिनों से क्यों कुछ बता नहीं रहे हो ? आप यदि मना भी कर दो, तो वह भी हमारे सिर आंखों पर है। तब पू. महंतस्वामी ने बहुत ही मार्मिक जवाब दिया कि—

वैसे तो ना ही कहनी है, पर तीन-चार दिन से मैं इसी दुविधा में हूँ कि तुम्हें 'ना' करने का मुझे जो विचार आया है वह अपने आप को तुम्हारा लीडर मान कर मेरे बोसीइम में से आया है ? या बापा ने मुझे आप सबको 'साधु' की शिक्षा देने की—संभालने की सेवा सौंपी है और मुझे वो भक्ति अदा करनी हैङ्कसो ना करनी है—उस भावना से ना कर रहा हूँ ?

यूं बड़े संत हमें ऐसा खुद जीकर बताते हैं कि तुम भी हमेशा अंतर्दृष्टि करके अपने भीतर में खूब टटोल कर प्रभु की भक्ति रूप लगे वो ही किया करना।

✡ कई बार सभा में बातें सुनने के बाद हम सबको कहते हैं कि आज तो सारी बातें मेरे पर ही करी....बहुत अच्छी बातें करी वगैरह....

पर, अगर हम सच में ऐसा मानते हैं कि ये बातें मेरे पर ही करी हैं तो दस जनों को दिखावा रूप कहने के बजाय इन बातों को लेकर जीने क्यों नहीं लग पड़ते और खुद को बदलते क्यों नहीं ?

✡ प. पू. काकाजी के पास जाकर बैठें तो वे हमारे ढंग से ही बातें करते। हमारे साथ-हमारे जैसे ही हो जाते; ताकि हमें इन्फीरियारिटी कोम्पलेक्स ना रहे और....... उनकी बातों को लेकर हम जीने लगेंगे तो सुखी हो जायेंगे।

✡ प. पू. काकाजी उन्हें ही डांट सकते थे जो इनके अपने थे। बाकी सब को तो जैसे प.पू. काकाजी कई बार बोल कर बताते—'नभाय, नभाय, नभाय, नभाय......' यानि—निभायें। पर ऐसे तो— जैसे मूंग में 'गांगडु' रह जाते हैं वैसे हम सत्संग में भी गांगडु की तरह ही रहते रहेंगे और फिर हमारी कोई वेल्यू नहीं रहेगी।

✡ प. पू. काकाजी ने निजी शिष्यों के 'मन' को कभी वृत्तियों के वेग में बहने नहीं दिया। किसी की महोब्बत में फंसे बिना या प्रभाव में बहे बिना-कुछ भी गिने बिना अपने सेवकों की कसर स्पष्ट दिखाते रहे.....वे शिष्यों के रागी नहीं थे, बल्कि भक्तों की मर्जी के मुताबिक नाचने वाले भक्तों के अनुरागी थे।

✡ प.पू. काकाजी ने प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिजी के साथ ऐसा ऐक्य रखकर हमारे लिए एक आदर्श स्थापित किया कि हमें मुक्तों के साथ ऐसी एकता से रहना चाहिए।

उनकी निगाह से कुछ भी बाहर नहीं था, वे सब कुछ जानते थे—पर, भावात्मक एकता से हम सब आपस में जुड़े रहें.....वह प.पू.काकाजी की ख्वाईश थी।

✡ प. पू. काकाजी में दोनों चीजें एक साथ दिखाई पड़ती थी....वे स्वामी भी थे और सेवक भी ! स्वामीसेवकभाव का अर्थ हम यह लेते हैं कि हमेशा झुकता रहे-ऐसा नहीं, बल्कि जगत के स्वामी और सत्संग में सभी के सेवक बन कर रहना। हम उल्टा करते रहते हैं। जगत में मजबूरी से झुकते रहेंगे और अपने में दो पैसे की बरकत ना होते हुए भी सत्संग में रौफ झड़ते रहते हैं।

✡ प.पू. काकाजी को चार पंखुड़ियों के समाज की बुलंद कामयाबी का—एक कलश चढ़ाने का जहाँ एक ओर संतोष था वहां दूसरी ओर सुहृदभाव का कलश ना चढ़ने का दर्द था। निम्न पंक्तियों से वह स्पष्ट जाहिर होता है—

एक कलश चढ़ गया....
वह एकता हमें स्थापित करनी है.....
हम वह अभी कर नहीं सके...
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाओ.....वो कलश चढ़ाने के लिए सब साथ देकर यही काम करें......

प.पू. काकाजी के इस प्रवचन में दोनों चीजें एक साथ दिखाई पड़ती हैं। एक ओर वे हम पर खुश भी दिखाई पड़ते हैं तो दूसरी ओर उनकी बातों में रंज भी दिखाई पड़ता है।

✡ कोई भी क्रिया हम किस भाव से करते हैं वो ही वेल्यू रखती है। मानो किसी शिष्य को उसकी प्रॉब्लम में से बाहर निकालने हम कुछ कोशिश करते हैं और सक्सेस हो जाते हैं, पर यदि स्वरूप को राजी करने ही नहीं किया होगा तो वो हमारी इगो बढ़ायेगा कि मैंने इतना परिश्रम किया और वो वापिस आ गया (प्रॉब्लम में से बाहर निकल गया)। पर, प.पू. काकाजी की सेवा करने-उन्हें एकमात्र राजी करने यदि यह किया होगा तो हमें मिलने वाले फल की प्राप्ति में जमीन-आसमान का नहीं, बल्कि आसमान-पाताल का फर्क पड़ जाएगा।

✡ हम जाग्रत तो हैं, पर अखंड जागृत नहीं........बीच-बीच में सो जाते हैं या कहीं रम जाते हैं........गुणातीत भावना में रहते साधु बनना है—उसी एकमात्र लक्ष्य की ओर अखंड जाग्रकता से लगे रहना है।

✡ गुणातीत भावना वाला साधु बनने के लिए अपना कोई एफर्ट काम में आने वाला नहीं है। इसके लिए बस ऐसे गुणातीत भाव को पाये साधु के साथ एकदम निष्कपट भाव से-बिना अंतराय रहित का संबंध करके अपने आपको जोड़ दें।

✡ यदि हमारी नज़र इस लक्ष्य की ओर टिकी नहीं रहेगी तो दुःख-दुःख से यानि-प्रसंग खड़े कर-करके, रुला-धुला कर पहुँचायेंगे तो सही, लेकिन वो रोते-धोते होगा, सुख-सुख से नहीं।

✡ इनकी कही बातें हम समझ नहीं पाते क्योंकि हमारी दृष्टि सीमित है। हमारी बुद्धि कुंठित है......असल में हमें अपनी कन्विकशन से-हमारे ढंग से जो जीवन जीना है, उस दायरे को छोड़ने हम तैयार नहीं।

✡ इतना ही समझे कि हम से ज्यादा वे समझे हुए हैं, तो-हम स्वरूप को कभी सलाह देने नहीं जायेंगे। हम तो कई बार स्वरूप को एक ही बात के लिए दस-दस बार तक कह देते हैं !

✡ स्वरूप को एक-दो बार कहें, पर फिर यह आग्रह कभी ना रखें कि वो ऐसा वर्ते–जैसा हमने कहा है।

✡ जब हम स्वरूप की बार-बार दोहराई बातों को नहीं समझते या अमल में नहीं लाते तो उसकी आंखों से आसूं तो नहीं टपकते, पर उनके हृदय में घाव जरुर लगते हैं।

✡ हम में स्पीरीच्युआलिटी ना रही हो तब लोगों के साथ रेपर्ट बनाने के लिए हमें समाज सेवा जैसे साधन की जरुरत पड़ती है। समाज सेवा नहीं करनी ऐसी बात नहीं– मैं समाज सेवा के खिलाफ भी नहीं हूँ, पर आध्यात्मिक विभूति का स्टेन्डर्ड खूब ऊँचा है......हमारे जीवन और प्रवृत्तियों का केन्द्र तो सिर्फ धाम, धामी और मुक्त ही हो सकते हैं। समाज सेवा वगैरह के लिये तो टाटा, बिरला जैसे बहुत बैठे हैं। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने भी कहा है कि–मोक्ष के मार्ग पर चलें उनके लिए हमारी सारी क्रिया है। (स्वामी की बातः प्र-14, 4) महर्षि अरविंद, रामकृष्ण परमहंस जैसे प्योर स्पीरीच्युअल मास्टर्स ने भी इसी बात का प्रतिपादन किया है।

✡ प.पू. काकाजी का 26 जनवरी का प्रवचन एक दिव्य चिंगारी है.....जैसे रुई की गांठ में एक जरा-सी चिंगारी डाल दी जाये तो पूरी गांठ खाक हो जायेगी, वैसे ही यह चिंगारी अपने भीतर में लग गई तो हमारे भीतर पड़े विषयों के रागों को खाक करके ही छोड़ेगी।

✡ महाराज वैसे खूब दयालु हैं, इतने अधिक दयालु कि महाराज ने एक जगह ऐसा कहा कि हरे पत्ते तोड़ते हुए मेरा दिल कांपता है–क्योंकि इसमें भी जीव है। पर, दूसरी ओर कहा–यदि कोई मेरे भक्तों का द्रोह करता है–यानि भक्तों को द्वेषभाव से कोई देखता है, तो मेरा मन ऐसा करता है कि मैं उसकी आंख फोड़ दूं......यह विरोधाभास ही है न ? पर यह बात बहुत गहरी है। इसमें महाराज ने एक रहस्य बता दिया कि और गल्तियाँ भले हो जायें, पर भक्तों की इंष्ट-द्रोह कभी नहीं करना, वर्ना मैं तुमसे मुँह फेर लूंगा।

पर **जो नहीं करना वही धन्धे हम करते रहते हैं और फिर कहते हैं कि आप हम पर राजी होओ। वो कैसे होगा ?**

✡ गुणातीत भावनावाले साधु बनना है......पर, उसके लिए प्रथम चाबी यह है कि स्वरूप जो कहे वो हम करते रहें !

✡✡✡✡✡

रक्षाबंधन का कृपाप्रसाद........

राखी पर बहनों ने बहुत अच्छी बात लिखी है। हमारी सब की बात है यह। परीक्षित की बात तो आप जानते ही होंगे। ऋषि ध्यान में थे, राजा परिक्षित ने कुछ छेड़छाड़ करी। ऋषि गुस्से में आ गए और श्राप दे दिया। मतलब एक कर्म खड़ा करा, उसका फल भोगना था। ऐसी सोच हमारी सब की रहती है..... 'ऐसा हो गया है, मैंने ऐसा कर दिया, पूर्वजन्म के कोई कर्म होंगे..... हमारे ग्रह ऐसे हैं इसलिए ऐसा हुआ है और अब ऐसा होगा'। देखो, यह हमारी व्यावहारिक बुद्धि है। कई बार तो इससे भी उतर कर सोचते हैं। मानो कोई दो जने बातें करते होंगे तो हमारा मन सोचता रहेगा– 'मेरे बारे बात करते होंगे'। क्या उसके जीवन में हम ही हैं ? क्या हम इतने इम्पोर्टन्ट व्यक्ति हैं कि हमारे बारे ही वह बात करता होगा। कोई किसी भी कारण हमसे कुछ ज्यादा प्यार से भी बीहेव कर जाए, तो सोचेंगे–'इसको कोई मतलब होगा इसलिए अब मक्खन लगा रहा है' या थोड़ा मिसबीहेव कर जाए तो– 'किसी ने उकसाया होगा इसलिए मेरे से ऐसी बातें कर रहा है'। छी.....छी....छी........छी........हम कितने गंदे मन के हैं ! काकाजी के कहलाने लायक ही नहीं हैं। हम चाहते हैं– प्रभु का आधार मिले, पर साथ-साथ स्टेन्डबाय अरेन्जमेन्ट भी तो रख रखते हैं कि अगर प्रभु ने काम नहीं करा तो अपनी यह छोटी-सी लकड़ी तो काम आ जाएगी। तो फिर हमने प्रभु का आधार क्या लिया ?

सब आधार छोड़ कर प्रभु का ही आधार ले, उसे महाराज ने बड़ा अक्लमंद बोला है।

हम अक्लमंद किसे समझते हैं ? स्टेन्डबाय अरेन्जमेन्ट-रख रखे वो।

जबकि महाराज ने कहा कि बुद्धिमान को तो भगवत्स्वरूप का बल ही अधिक रखना चाहिए। हम अपने आप को बड़े चौधरी समझते हैं, अक्लमंद समझते हैं लेकिन महाराज की नजर में हम अक्लमंद नहीं हैं।

संस्था का एक कार्ड था–बहुत अच्छा था, मुझे वो खूब पसंद आया था। मैंने उसकी नेगेटीव बनवा कर बड़ा फोटो बनवाया था। प.पू. स्वामिजी ने कहा था कि यह बहुत अच्छा है-मुझे एक फोटो भेज देना। स्वामिजी के आसान के पीछे हमेशा वो रहता है। 'सभी आधार छोड़ कर प्रभु का एक आधार.....'

देखो, ये सारी चीज़ें, ये बातें, ये सूत्र-ये सब हमें भा जरुर जाती हैं; लेकिन एन मौके पर हम वो चीज़ प्रेक्टीस में नहीं लाते.........

' पहले इस्तेमाल करो, फिर विश्वास करो !' कोई एड है यह, 'घड़ी' डिर्टेजेन्ट पाऊडर की ! बराबर ! यूं जब भी कोई परेशानी आ जाए तब–

'ये इसलिए हुआ, ये इसने करा, अब इससे ऊपर कुछ नहीं होना है। ये पीछा नहीं छोड़ेगा मेरा।'

इन सभी सोच को छोड़ कर हम 'स्वामिनारायण मंत्र का तीव्रता से भजन-रटन शुरु कर दें'। कैसा भजन ? मेरा हार्ट का ऑप्रेशन हुआ और तब आप सबने कैसा भजन करा ? काकाजी की समाधि पर जा-जाकर 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण-स्वामिनारायण......'। ऐसा भजन करें वो पहुँचता है.....

लेकिन हमारी जड़ता है जो इतने अनुभवों के बावजूद ऐसी कई बातों का हमें विश्वास नहीं होने देती कि सच में ऐसा होता होगा।

मैं अभी इसमें–'भगवद् गोमंडल' में पढ़ता था कि महाभारत में दुर्योधन का गदा युद्ध होना था, तो-उसको ऐसा था कि भीम तो मुझे मार देगा। सो, उसे इसका उपाय बताया गया कि अगर ये गांधारी के पास तू तेरा पूरा शरीर खुला कर देगा, तो तेरा शरीर लोहे का बन जाएगा। जहां भी कोई आवरण होगा, तो इतना पोर्शन तेरा कच्चा रह जाएगा। पहले तो उसने सोचा कि कोई हर्जा नहीं, मरने से अच्छा है कि पूरा निर्वस्त्र खड़ा रह जाऊं। पर, फिर श्रीकृष्ण की चातुरी ने उसे केले के पत्तों का कच्छा पहनने मजबूर कर दिया ! और महाभारत बताता है कि कमर के सिवा उसका पूरा शरीर वज्र का बन गया था ! तो, यह क्या था ? एक बार काकाजी ने बात करी थी कि–हर एक को सम्राट बनने का ख्वाब रहता है। लेकिन **जो स्वराट् बनेगा वही सम्राट बन पाएगा।** स्वराट् यानि अपने आप पर जो काबू रखे। अपनी इन्द्रियाँ, अंतःकरण और मन के ऊपर जो काबू रखे–मन का माना होने ही नहीं दे; 'गुरुमुखी ही रहना है' ऐसा जो रहेगा वो सम्राट बनेगा। मतलब इन्द्रियों पर जो काबू रखेगा वो शक्तिशाली बनेगा। **गांधारी की बात ऐसी थी। आंखों पर उसने काबू रख लिया था।** इसे मैंने अलग ढंग से भी एक बार कहा था कि कोई व्यक्ति यदि लंबे अरसे तक कभी झूठ बोले ही नहीं, तो उसके मुंह से अनजाने में निकली झूठ बात भी 'सच' बन जाएगी ! **गांधारी की आँख इतनी तेजस्वी बन गई थी कि सामने वाले व्यक्ति पर वो तेज का शक्तिपात कर सकती थी।** ये बातें हम सुनते हैं, लेकिन हमें विश्वास नहीं आता। पर, महाभारत का ये इन्सीडेन्स गवाही देता है.... दूसरी बात–अपने यहां बोला जाता है-पराई स्त्री से चार आंखे ना होने दो। वो भी सीधा एक व्यभिचार ही है..... उसका उदाहरण है कुंति ! वो क्या बताता है ? यदि इन बातों को मानते हैं, तो हम हमारी आँखें कभी भी कोई पराई औरत की आँखों के साथ मिलायेंगे नहीं। हां, हमें मिलाने का तभी अधिकार है, जब उसकी आँखों में देख कर हम उसे प्रभु दे सकते–उसका जीवन प्रभुमय बना सकते हैं–तब बात अलग है। हाँ, अभी हम बात कर रहे थे–परीक्षित वाली–ऋषि ने श्राप दिया।

कई सालों पहले काकाजी ने ये बात हंसराजजी के यहां करी थी..... ऋषि और संत में क्या फर्क ? **ऋषि गुस्से में आकर श्राप दे देगा, संत कभी श्राप नहीं देगा।** बातें हमने सुनी हैं लेकिन इस स्टेटस का फर्क हमने कभी सोचा है क्या ? **लेकिन हमें प्रभाव ऐसे सिद्धों का है।** जैसे कि एक बार मैंने पूछा था कि यहां से कोई महात्मा अध्धर उड़ कर जाने वाला हो और यहां सभा चल रही हो तो कितने उठकर देखने चले जाएंगे ? पांच-सात तो ऐसे निकले थे जिन्होंने हाथ खड़ा करा...

हाँ, तो राजा परीक्षित की बात कर रहे थे–'मैं राजा हूँ और ऐसे श्राप लगा है, सो मेरी मौत होगी'–ये जो इन्टलेक्च्युअल प्रोस एण्ड कॉन्स-कॉज़ एण्ड ईफेक्ट रुल कि-'ये हुआ है इसलिए ऐसा होगा'–ये सारी जो चीज़े हैं–गिनतियां वो बौद्धिक हैं.... **सब कुछ सही है, लेकिन सबसे ऊपर सत्ता प्रभु की है।** 'भले गल्ती करी है–सब कुछ हुआ है, लेकिन में प्रभु के पास जाकर माफी मांग लूंगाँ, वो मेरा जरूर सुनेंगे–माफी बख्शेंगे ही'–यह जो विश्वास है उसे निष्ठा बोली जाती है.....

प.पू. काकाजी कहते थे कि हम रोज़-रेग्युलर भजन करें तो ऐसे प्रसंग बनेंगे ही नहीं। कई ये भी सोचते हैं कि हमारा स्वभाव ही ऐसा हैं-छूटेगा नहीं; पर प्रभु से संबंध कर लेंगे तो स्वभाव अपने आप क्लचीझ छोड़ देंगे। **प्रभु बलवान या स्वभाव बलवान?**

इन बातों का जिसको भरोसा नहीं है, उसकी बुद्धि पशुबुद्धि है। शुकजी ने याद करा कर समझाया भी कि–अरे तू कैसे भूल जाता है ? गर्भ में भी-उत्तरा के गर्भ में आकर प्रभु ने तेरी रक्षा करी है। तू तो वहीं मर जाने वाला था। देखो, अंधा विश्वास भी रखने को नहीं कहते। काकाजी कहते थे ना कि पहले हमें नाईट्रिक एसिड में डालकर टेस्ट करो। पहले पक्का टेस्ट कर लो। देखो, प्रहलाद् की भगवान ने रक्षा करी, लेकिन पहले उसको दिखाया कि खम्भे के ऊपर चींटीयां चलती थी। जब इतने गरम खम्भे के ऊपर चींटीयां चल सकती हैं, तो उसे क्या होना था ? देखो, अंधे विश्वास की बात नहीं है। लेकिन फिर भी हम सोचें कि-'भई चींटीयों ने तो सत्कर्म करें होंगे' इसलिए जिंदी रह सकती हैं। हम तो पापी ठहरे ! हमारे तो कर्म ही ऐसे हैं, हम तो ऐसे हैं, हम तो नरक के अधिकारी हैं। हमारे तो स्वभाव ही

ऐसे हैं वगैरह'। तो फिर हमारी समझ हमें मुबारक हो। हमें ये बात पक्की होनी चाहिये कि हम कैसे भी हैं—हैं उसके !....तो, जिन्होंने हमारी रक्षा बार-बार करी है। उन भगवान को याद करें ! सारी भागवत् का सार कहो इतनी बातों में है। आज की सारी बातों का सार भी इतनी बातों में है। कुछ भी हो जाए, कुछ भी हुआ हो, कुछ भी आगे भी हो—बस हमें यही करना है 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण !' प.पू. स्वामिजी ने भी इसे अलग ढंग से कहा हैं भगवान की मूर्ति से भी पावरफुल उसका नाम है। इस बार आए थे, तब ये बात करी थी। हम बात सुनते हैं क्या ?.....

ऐसे भगवान हमें मिले। दूसरों को तो ढूंढने हैं। सो वे सारी तपस्या करते रहते हैं। हम भजन करते हैं—क्योंकि हमें जो मिले हैं वो राजी हों उसके लिए करना है। उसको पाने के लिए नहीं। प्रतीति भी कराई, एक बार नहीं कई बार कराई। लेकिन तब भी अपना डाऊटिंग माईन्ड बोलता है कि उस समय ऐसा हुआ होगा, सो ऐसा हो गया होगा..... हम गल्तियाँ करते रहे और वो हमारी रक्षा करते ही रहे, करते ही रहे......सो, गुणातीतानंदस्वामी ने हमारी बुद्धि को पशुबुद्धि कही, जिसको हम बड़ी काम की समझते हैं।

आज तक जो करा, भले करा—लेकिन अब सर्वोपरि, सुप्रीम, सर्वकर्ता, करने-कराने वाले और प्रगट—जो गए ही नहीं—उन पर सब कुछ छोड़ कर-हम छोड़ते हैं लेकिन सब कुछ नहीं छोड़ते......

तो हर प्रकार से—तन से, मन से, धन से, आत्मा से—ऐसा नहीं लिखा कि जाओ-जाओ तुम्हारी आत्मा का कल्याण हो जाए। महाराज ने वरदान भी कैसे मांग लिए ? कि मेरा आश्रित रोटी, कपड़े और मकान से वंचित ना रह जाए। उसका व्यवहार भी ठीक होना चाहिए। भगत हो और घर-घर भटकता रहे और फिर कहे हमें भगवान मिले हैं—कौन मानेगा ? काकाजी को तो हम संत लोग भी किसी से मांगे-करें वह भी पसंद नहीं आता था। बोलते थे-अरे ! भिखारियों तुम्हारा बाप कौन ?

सो, प्रभु हर प्रसंग पर रक्षा करेंगे, करेंगे, करेंगे ही। प्रत्यक्ष प्रभुस्वरूप संतों का ऐसा हमारा आसरा और निष्ठा दृढ़ हो ऐसे बहनों ने इस बार आशीर्वाद भेजे हैं.........

—प.पू. गुरुजी

✡✡✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 26. 8.2000	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 1. 9. 2000	शुक्रवार	—	प्र. ब्र. स्व. प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन, गणेश चतुर्थी
(3)	दि. 9. 9. 2000	शनिवार	—	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(4)	दि. 10. 9. 2000	रविवार	—	वामन जयंती, फराली व्रत
(5)	दि. 17. 9.2000	रविवार	—	ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज—श्राद्ध तिथि
(6)	दि. 22. 9.2000	शुक्रवार	—	श्रीजी महाराज—श्राद्ध तिथि
(7)	दि. 23. 9.2000	शनिवार	—	एकादशी, ब्र. स्व. योगीजी महाराज—श्राद्ध तिथि
(8)	दि. 24. 9.2000	रविवार	—	ब्र. स्व. काकाजी महाराज—श्राद्ध तिथि
(9)	दि. 25. 9.2000	सोमवार	—	मू.अ. मू. गुणातीतानंदस्वामी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज—श्राद्ध तिथि

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5953035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,